IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

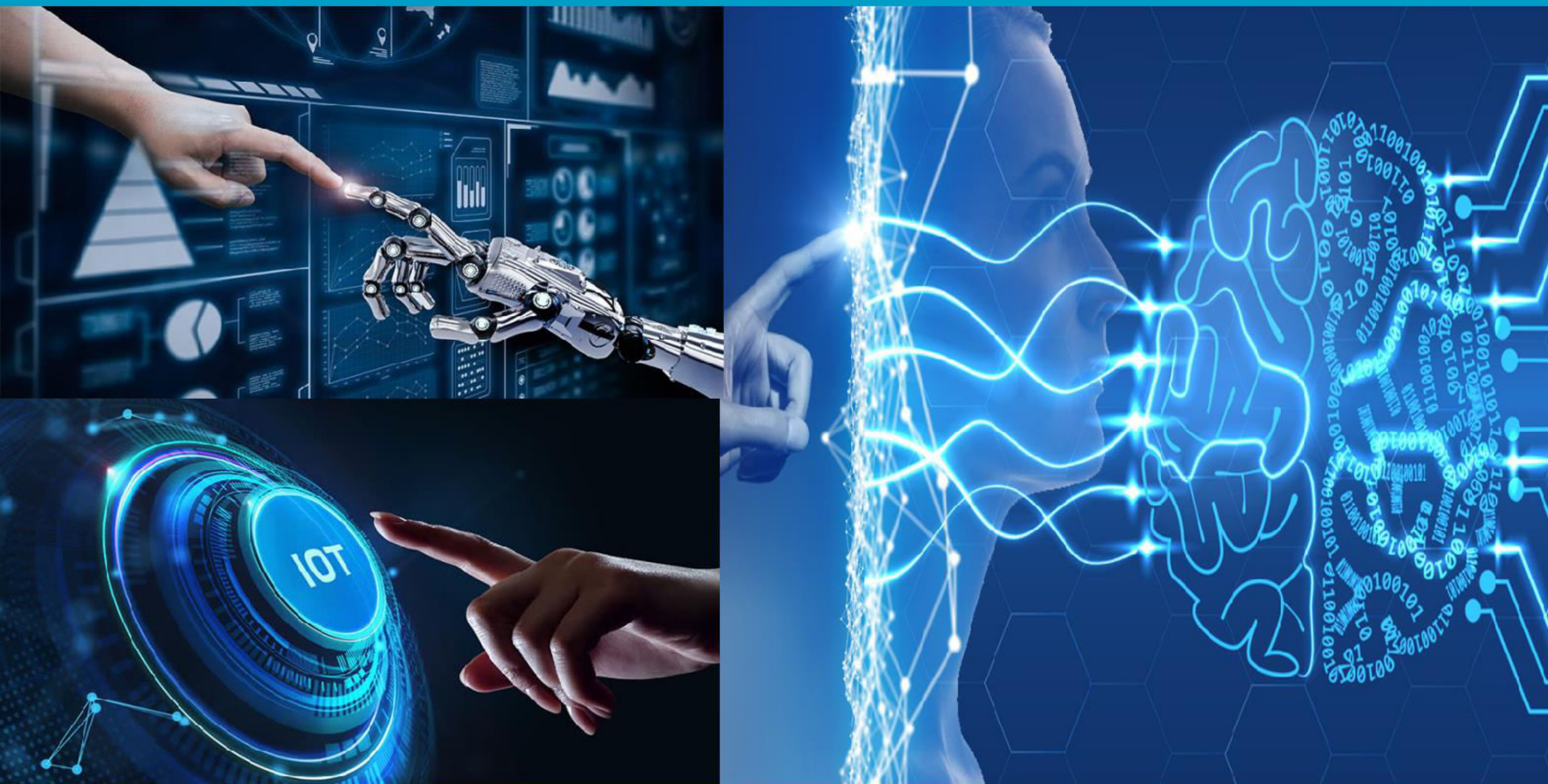

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 10, Issue 6, June 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

+91 99405 72462 +9163819 07438 ijmrsetm@gmail.com www.ijmrsetm.com

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

महाराजा रणजीत सिंह

Bheem Singh

NET/SET, Department of History and Indian Culture, University of Rajasthan, Jaipur, Rajasthan, India

सार

महाराजा रणजीत सिंह (पंजाबी: ਮਹਾਰਾਜਾ ਰਣਜੀਤ ਸਿੰਘ) (१७८०-१८३९) पंजाब प्रांत के राजा थे। वे शेर-ए पंजाब के नाम से प्रसिद्ध हैं। महाराजा रणजीत एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने न केवल पंजाब को एक सशक्त सूबे के रूप में एकजुट रखा, बल्कि अपने जीते-जी अंग्रेजों को अपने साम्राज्य के पास भी नहीं भटकने दिया। रणजीत सिंह का जन्म सन् 1780 में गुजरांवाला (अब पाकिस्तान) संधावालिया जाटमहाराजा महा सिंह के घर हुआ था। उन दिनों पंजाब पर सिखों और अफ़ग़ानों का राज चलता था जिन्होंने पूरे इलाके को कई मिसलों में बांट रखा था। रणजीत के पिता महा सिंह सुकरचकिया मिसल के कमांडर थे। पश्चिमी पंजाब में स्थित इस इलाके का मुख्यालय गुजरांवाला में था। छोटी सी उम्र में चेचक की वजह से महाराजा रणजीत सिंह की एक आंख की रोशनी चली गयी थी।[4] वे महज़ 12 वर्ष के थे जब उनके पिता चल बसे और राजपाट का सारा बोझ उन्हीं के कंधों पर आ गया।[5] 12 अप्रैल 1801 को रणजीत सिंह ने महाराजा की उपाधि ग्रहण की। गुरु नानक जी के एक वंशज ने उनकी ताजपोशी संपन्न कराई। उन्होंने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया और सन 1802 में अमृतसर की ओर रूख किया।

महाराजा रणजीत ने अफ़ग़ानों के खिलाफ कई लड़ाइयां लड़ीं और उन्हें पश्चिमी पंजाब की ओर खदेड़ दिया। अब पेशावर समेत पश्तून क्षेत्र पर उन्हीं का अधिकार हो गया। यह पहला मौक़ा था जब पश्तूनों पर किसी ग़ैर-मुस्लिम ने राज किया। उसके बाद उन्होंने पेशावर, जम्मू कश्मीर और आनंदपुर पर भी अधिकार कर लिया। पहली आधुनिक भारतीय सेना - "सिख ख़ालसा सेना" गठित करने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है। उनकी सरपरस्ती में पंजाब अब बहुत शक्तिशाली सूबा था। इसी ताक़तवर सेना ने लंबे अर्से तक ब्रिटेन को पंजाब हड़पने से रोके रखा। एक ऐसा मौक़ा भी आया जब पंजाब ही एकमात्र ऐसा सूबा था, जिस पर अंग्रेजों का क़ब्ज़ा नहीं था। ब्रिटिश इतिहासकार जे टी व्हीलर के मुताबिक़, अगर वह एक पीढ़ी पुराने होते, तो पूरे हिंदूस्तान को ही फतह कर लेते। महाराजा रणजीत खुद अनपढ़ थे, लेकिन उन्होंने अपने राज्य में शिक्षा और कला को बहुत प्रोत्साहन दिया।

उन्होंने पंजाब में क़ानून एवं व्यवस्था क़ायम की और कभी भी किसी को मृत्युदण्ड नहीं दिया।[6] उनका सूबा धर्मनिरपेक्ष था उन्होंने हिंदुओं और सिखों से वसूले जाने वाले जज़िया पर भी रोक लगाई। कभी भी किसी को सिख धर्म अपनाने के लिए विवश नहीं किया। उन्होंने अमृतसर के हरिमन्दिर साहिब गुरूद्वारे में संगमरमर लगवाया और सोना मढ़वाया, तभी से उसे स्वर्ण मंदिर कहा जाने लगा। बेशक़ीमती हीरा कोहिनूर महाराजा रणजीत सिंह के ख़ज़ाने की रौनक था। सन् 1839 में महाराजा रणजीत का निधन हो गया। उनकी समाधि लाहौर में बनवाई गई, जो आज भी वहां क़ायम है। उनकी मौत के साथ ही अंग्रेजों का पंजाब पर शिकंजा कसना शुरू हो गया। अंग्रेज-सिख युद्ध के बाद 30 मार्च 1849 के दिन पंजाब को ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बना लिया गया और कोहिनूर महारानी विक्टोरिया के हुज़ूर में पेश कर दिया गया।[1,2,3]

परिचय

रणजीत सिंह का जन्म सन् १७८० ई. में जट सिख (जाट) परिवार में हुआ था।[7][8][9][10] महा सिंह के मरने पर रणजीत सिंह बारह वर्ष की अवस्था में मिस्ल सुकरचकिया के नेता हुए। सन् १७९८ ई. में जमान शाह के पंजाब से लौट जाने पर उन्होंने लाहौर पर अधिकार कर लिया। धीरे-धीरे सतलज से सिंधु तक, जितनी मिस्लें राज कर रही थीं, सबको उन्होंने अपने वश में कर लिया। सतलज और यमुना के बीच फुलकियों मिस्ल के शासक राज कर रहे थे। सन् १८०६ ई. में रणजीत सिंह ने इनको भी अपने वश में करना चाहा, परन्तु सफल न हुए।

रणजीत सिंह में सैनिक नेतृत्व के बहुत सारे गुण थे। वे दूरदर्शी थे। वे साँवले रंग का नाटे कद के मनुष्य थे। उनकी एक आँख शीतला के प्रकोप से चली गई थी। परन्तु यह होते हुए भी वह तेजस्वी थे। इसलिए जब तक वह जीवित थे, सभी मिस्लें दबी थीं। उस समय अंग्रेजों का राज्य यमुना तक पहुँच गया था और फुलकियाँ मिस्ल के राजा अंग्रेजी राज्य के प्रभुत्व को मानने लगे थे। अंग्रेजों ने रणजीतसिंह को इस कार्य से मना किया। रणजीतसिंह ने अंग्रेजों से लड़ना उचित न समझा और संधि कर ली कि सतलज के आगे हम अपना राज्य न बढ़ाएँगे। रणजीतसिंह ने फ्रांसीसी सैनिकों को बुलाकर, उसकी सैनिक कमान में अपनी सेना को विलायती ढंग पर तैयार किया।

अब उनने पंजाब के दक्षिणी, पश्चिमी और उत्तरी भागों पर आक्रमण करना प्रारंभ किया और दस वर्ष में मुल्तान, पेशावर और कश्मीर तक अपने राज्य को बढ़ा लिया।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

रणजीतसिंह ने पेशावर को अपने अधिकार में अवश्य कर लिया था, किंतु उस सूबे पर पूर्ण अधिकार करने के लिए उसे कई वर्षों तक कड़ा संघर्ष करना पड़ा था। वह पूरे पंजाब का स्वामी बन चुका; और उसे अंग्रेजों के हस्तक्षेप का सामना नहीं करना पड़ा। परंतु जिस समय अंग्रेजों ने नैपोलियन की सेनाओं के विरुद्ध सिक्खों से सहायता माँगी थी, उन्हें प्राप्त न हुई।[5,7,8]
रणजीतसिंह ने सन् १८०८ ई. में अपनी महत्वाकांक्षिणी सास सदाकोर के नाम पेशावर का राज्य परिवर्तित कर दिया था। क्योंकि यह अंग्रेजों की एजेंट महिला थी। रणजीतसिंह ने अपनी कुचक्रप्रिय सास से झगड़ा करके उसे कैद कर लिया था और ह्वदनी के गढ़ को अपने अधिकार में कर लिया था। ब्रिटिश सेना की एक टुकड़ी ने बंदी विधवा सदाकौर को छुड़ाया और अधिकार को वापस दिलाया। ब्रिटिश सेना के साथ रणजीतसिंह किसी प्रकार का झगड़ा नहीं चाहते थे।

सन १८३५ में महाराजा रणजीत सिंह ने काशी विश्वनाथ मंदिर को एक टन सोना दान किया जिससे उसके ऊपरी भाग पर स्वर्णपत्र जड़ा गया।
अंग्रेजों की तरफ से संधि की शर्तों को भंग करने का आरोप लगाया जा सकता था। इसलिए चुपचाप मौन रहकर उसने तैयारियाँ प्रारम्भ की थीं फिर भी १८०९ ई. में लार्ड मिंटो से संधि कर ली। यद्यपि इस संधि से महाराज को सिक्खों में बहुत अपमानित होना पड़ा था। उपर्युक्त संधि के कारण पंजाब के अफगानी राज्य तथा अफगानिस्तान को कुछ हद तक आंतकित कर सके थे। १८०२, १८०६ तथा १८१० ई. में मुलतान पर चढ़ाई की और अधिकार कर लिया एवं शाह शूजा से संधि करके अपने यहाँ रखा और उससे एक गिलास पानी के लिए 'कोहेनूर हीरा' प्राप्त किया। १८११ ई. में काबुल के शाह महमूद के आक्रमण की बात सुनकर और यह जानकार कि महमूद का इरादा काश्मीर के शासक पर आक्रमण का है, उसने काश्मीर पर आक्रमण कर दिया ताकि महमूद को वापस जाना संभव हो जाए और उसकी मित्रता भी इसे मिल जाए। काश्मीर के बाद इसने पेशावर पर १८२२ में चढ़ाई कर दी, यारमुहम्मद खाँ अफगानियों का नेतृत्व करता हुआ बहुत बहादुरी से लड़ा लेकिन अंत में पराजित हुआ। इस युद्ध में सिक्खों का भी बड़ा नुकसान हुआ। १८३८ में पेशावर पर रणजीतसिंह के अधिकार से भयभीत होकर दोस्तमुहम्मद खाँ काबुलनरेश बहुत भयभीत हुआ और रूस तथा ईरान से दोस्ती कर ली। इस बात को ध्यान में रखकर अंग्रेजों ने स्वयं रणजीतसिंह तथा शाहशुजा के साथ एक त्रिगुटसंधि कराई। महाराजा रणजीतसिंह अस्वस्थ हो रहे थे। १८३८ में लकवा का आक्रमण हुआ, यद्यपि उपचार किया गया और अंग्रेज डाक्टरों ने भी इलाज किया, लेकिन २७ जून १८३९ ई. को उनका प्राणांत हो गया। वेह उदारहृदय भी थे। काशी विश्वनाथ मंदिर पर जो स्वर्णपत्र आज दिखाई देता है वह उसकी काशीयात्रा तथा उदारता का परिचायक है। [9,10,11]उसने दान के लिए ४७ लाख रुपए की सम्पत्ति अलग कर रखी थी। जगन्नाथमंदिर पर भी वह कोहेनूर हीरा चढ़ाना चाहते थे लेकिन उस हीरे को तो विदेश में जाकर छिन्न-भिन्न होना था। महाराजा के बाद सिक्खों के आपसी वैमनस्य, राष्ट्रद्रोह तथा अंग्रेजी कूटनीतिज्ञता का जवाब न देने की असमर्थता से सिक्ख राज्य मिट गया।

विचार-विमर्श
कश्मीर और कोहिनूर

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

महाराजा ने स्वर्णमन्दिर का पुनरुद्धार कराया।

बात सन् 1812 की है। पंजाब पर महाराजा रणजीत सिंह का एकछत्र राज्य था। उस समय महाराजा रणजीत सिंह ने कश्मीर के सूबेदार अतामोहम्मद के शिकंजे से कश्मीर को मुक्त कराने का अभियान शुरू किया था। इस अभियान से भयभीत होकर अतामोहम्मद कश्मीर छोड़कर भाग गया। कश्मीर अभियान के पीछे एक अन्य कारण भी था। अतामोहम्मद ने महमूद शाह द्वारा पराजित शाहशुजा को शेरगढ़ के किले में कैद कर रखा था। उसे कैदखाने से मुक्त कराने के लिए उसकी बेगम वफा बेगम ने लाहौर आकर महाराजा रणजीत सिंह से प्रार्थना की और कहा कि मेहरबानी कर आप मेरे पति को अतामोहम्मद की कैद से रिहा करवा दें, इस अहसान के बदले बेशकीमती कोहिनूर हीरा आपको भेंट कर दूंगी। शाहशुजा के कैद हो जाने के बाद वफा बेगम ही उन दिनों अफगानिस्तान की शासिका थी। इसी कोहिनूर को हड़पने के लालच में भारत पर आक्रमण करने वाले अहमद शाह अब्दाली के पौत्र जमान शाह को स्वयं उसी के भाई महमूद शाह ने कैदखाने में भयंकर यातनाएं देकर उसकी आंखें निकलवा ली थीं।

जमान शाह अहमद शाह अब्दाली के बेटे तैमूर शाह का बेटा था, जिसका भाई था महमूद शाह। अस्तु, महाराजा रणजीति सिंह स्वयं चाहते थे कि वे कश्मीर को अतामोहम्मद से मुक्त करवाएं। अत: सुयोग आने पर महाराजा रणजीत सिंह ने कश्मीर को आजाद करा लिया। उनके दीवान मोहकमचंद ने शेरगढ़ के किले को घेर कर वफा बेगम के पति शाहशुजा को रिहा कर वफा बेगम के पास लाहौर पहुंचा दिया। राजकुमार खड्गसिंह ने उन्हें मुबारक हवेली में ठहराया। [15,17,18]पर वफा बेगम अपने वादे के अनुसार कोहिनूर हीरा महाराजा रणजीत सिंह को भेंट करने में विलम्ब करती रही। यहां तक कि कई महीने बीत गए। जब महाराजा ने शाहशुजा से कोहिनूर हीरे के बारे में पूछा तो वह और उसकी बेगम दोनों ही बहाने बनाने लगे। जब ज्यादा जोर दिया गया तो उन्होंने एक नकली हीरा महाराजा रणजीत सिंह को सौंप दिया, जो जौहरियों के परीक्षण की कसौटी पर नकली साबित हुआ। रणजीत सिंह क्रोध से भर उठे और मुबारक हवेली घेर ली गई। दो दिन तक वहां खाना नहीं दिया गया। वर्ष 1813 की पहली जून थी जब महाराजा रणजीत सिंह शाहशुजा के पास आए और फिर कोहिनूर के विषय में पूछा। धूर्त शाहशुजा ने कोहिनूर अपनी पगड़ी में छिपा रखा था। किसी तरह महाराजा को इसका पता चल गया। अत: उन्होंने शाहशुजा को काबुल की राजगद्दी दिलाने के लिए "गुरुग्रंथ साहब" पर हाथ रखकर प्रतिज्ञा की। फिर उसे "पगड़ी-बदल भाई" बनाने के लिए उससे पगड़ी बदल कर कोहिनूर प्राप्त कर लिया। पर्दे की ओट में बैठी वफा बेगम महाराजा की चतुराई समझ गईं। अब कोहिनूर महाराजा रणजीत सिंह के पास पहुंच गया था और वे संतुष्ट थे कि उन्होंने कश्मीर को आजाद करा लिया था। उनकी इच्छा थी कि वे कोहिनूर हीरे को जगन्नाथपुरी के मंदिर में प्रतिष्ठित भगवान जगन्नाथ को अर्पित करें। हिन्दू मंदिरों को मनों सोना भेंट करने के लिए वे प्रसिद्ध थे। काशी के विश्वनाथ मंदिर में भी उन्होंने अकूत सोना अर्पित किया था। परन्तु जगन्नाथ भगवान (पुरी) तक पहुंचने की उनकी इच्छा कोषाध्यक्ष बेलीराम की कुनीति के कारण पूरी न हो सकी।[19]

अमृतसर में महाराजा रणजीत सिंह की प्रतिमा

महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात् अंग्रेजों ने सन् 1845 में सिखों पर आक्रमण कर दिया। फिरोजपुर क्षेत्र में सिख सेना वीरतापूर्वक अंग्रेजों का मुकाबला कर रही थी। किन्तु सिख सेना के ही सेनापति लालसिंह ने विश्वासघात किया और मोर्चा छोड़कर लाहौर पलायन कर गया। इस कारण विजय के निकट पहुंचकर भी सिख सेना हार गई। अंग्रेजों ने सिखों से कोहिनूर हीरा ले लिया। साथ ही कश्मीर और हजारा भी सिखों से छीन लिए क्योंकि अंग्रेजों ने डेढ़ करोड़ रुपए का जुर्माना सिखों पर किया था, अर्थाभाव-ग्रस्त सिख किसी तरह केवल 50 लाख रुपए ही दे पाए थे। लार्ड हार्डिंग ने इंग्लैण्ड की रानी विक्टोरिया को खुश करने के लिए कोहिनूर हीरा लंदन पहुंचा दिया, जो "ईस्ट इंडिया कम्पनी" द्वारा रानी विक्टोरिया को सौंप दिया गया। उन दिनों महाराजा रणजीत सिंह के पुत्र दिलीप सिंह वहीं थे। कुछ लोगों का कथन है कि दिलीप सिंह से ही अंग्रेजों ने लंदन में कोहिनूर हड़पा था। कोहिनूर को 1 माह 8 दिन तक जौहरियों ने तराशा और फिर उसे रानी विक्टोरिया ने अपने ताज में जड़वा लिया।[17,18]

परिणाम

सिख शासन की शुरुवात करने वाले महाराजा रणजीत सिंह ने उन्नीसवी सदी में अपना शासन शुरू किया, उनका शासन पंजाब प्रान्त में फैला हुआ था और उन्होने दल खालसा नामक एक संगठन का नेतृत्व किया था. उन्होने छोटे गुटों में बंटे हुए सिखों को एकत्रित किया. उनके बाद उनके पुत्र खड़ग सिंह ने सिख शासन की कमान संभाली.

महाराजा रणजीत सिंह ने मिसलदार के रूप में अपना लोहा मनवा लिया था और अन्य मिसलदारों को हरा कर अपना राज्य बढ़ाना शुरू कर दिया था. पजाब क्षेत्र के सभी इलाकों में उनका कब्ज़ा था पूर्व में अंग्रजों के और पश्चिम में दुर्रानी के राज्य के बीच में उनका राज्य था.

रंजित सिंग जी ने पुरे पुजाब को एक किया और सिख राज्य की स्थापना की. महाराजा रणजीत ने अफगानों के खिलाफ कई लड़ाइयां लड़ीं और पेशावर समेत पश्तून क्षेत्र पर अधिकार कर लिया. ऐसा पहली बार हुआ था कि पश्तूनो पर किसी गैर मुस्लिम ने राज किया हो। उसके बाद उन्होंने पेशावर, जम्मू कश्मीर और आनंदपुर पर भी अधिकार कर लिया। ब्रिटिश इतिहासकार जे टी व्हीलर के अनुसार, अगर वे एक पीढ़ी पुराने होते, तो पूरे भारत को जीत लेते।

रणजीतसिंह का जन्म सन् १७८० ई. में हुआ था। वह जाट समाज के पृतापि राजा थे महानसिंह के मरने पर रणजीतसिंह बारह वर्ष की अवस्था में मिस्ल सुकरचकिया के नेता हुए। सन् १७९८ ई. में जमान शाह के पंजाब से लौट जाने पर उन्होने लाहौर पर अधिकार कर लिया। धीरे-धीरे सतलज से सिंधु तक, जितनी मिस्लें राज कर रही थीं, सबको उसने अपने वश में कर लिया। सतलज और यमुना के बीच फुलकियों मिस्ल के शासक राज्य कर रहे थे। सन् १८०६ ई. में रणजीतसिंह ने इनको भी अपने वश में करना चाहा, परंतु सफल न हुए।

रणजीतसिंह में सैनिक नेतृत्व के बहुत सारे गुण थे। वे दूरदर्शी थे। वे साँवले रंग का नाटे कद के मनुष्य थे। उनकी एक आँख शीतला के प्रकोप से चली गई थी। परंतु यह होते हुए भी वह तेजस्वी थे। इसलिए जब तक वह जीवित थे, सभी मिस्लें दबी थीं।[18,19]

उस समय अंग्रेजों का राज्य यमुना तक पहुँच गया था और फुलकियाँ मिस्ल के राजा अंग्रेजी राज्य के प्रभुत्व को मानने लगे थे। अंग्रेजों ने रणजीतसिंह को इस कार्य से मना किया। रणजीतसिंह ने अंग्रेजों से लड़ना उचित न समझा और संधि कर ली कि सतलज के आगे हम अपना राज्य न बढ़ाएँगे। रणजीतसिंह ने फ्रांसीसी सैनिकों को बुलाकर, उसकी सैनिक कमान में अपनी सेना को विलायती ढंग पर तैयार किया।

अब उनने पंजाब के दक्षिणी, पश्चिमी और उत्तरी भागों पर आक्रमण करना प्रारंभ किया और दस वर्ष में मुल्तान, पेशावर और कश्मीर तक अपने राज्य को बढ़ा लिया।

रणजीतसिंह ने पेशावर को अपने अधिकार में अवश्य कर लिया था, किंतु उस सूबे पर पूर्ण अधिकार करने के लिए उसे कई वर्षों तक कड़ा संघर्ष करना पड़ा था। वह पूरे पंजाब का स्वामी बन चुका; और उसे अंग्रेजों के हस्तक्षेप का सामना नहीं करना पड़ा।

रणजीत सिंह (Maharaja Ranjit Singh) दूरदर्शी राजनीतिज्ञ थे | उन्होंने जम्मू और कश्मीर को मिलाकर एक प्रभुता सम्पन्न शक्तिशाली राज्य का रूप दिया | यह राज्य तिब्बत के पश्चिमी सिंध के उत्तर और खैबर दर्रे से लेकर यमुना नदी के पश्चिमी तट तक एक भौगोलिक और राजनितिक इकाई था | उन्होंने न तो अंग्रेजो से युद्ध किया और न उनकी सेनाओं को अपने राज्य के अंदर आने दिया | काबुल के शासको ने पेशावर पर कब्जा करने के कई असफल प्रयत्न किये | 1849 में अंग्रेजो के अधिकार में आने तक यहा सिखों का आधिपत्य बना रहा |

59 वर्ष की उम्र में 1839 में रणजीत सिंह की मृत्यु हो गयी यद्यपि उसके 10 वर्ष बाद ही यह राज्य विच्छिन हो गया पर अपनी वीरता , राज्ञितिग्यता और उदारता के लिए महाराजा रणजीत सिंह (Maharaja Ranjit Singh) को भारत के इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है | उनकी सरकार साम्प्रदायिक आग्रहों से मुक्त थी और उसमे सभी समुदायों के लोग सम्मिलित थे | उन्होंने ऊँचे पदों पर हिन्दू और मुसलमानों सभी योग्य व्यक्तियों को नियुक्त किया | कनिघम में लिखा है कि उनका राज्य जन-भावना पर आधारित था | हिस्ट्री आफ द सिख के लेखक के शब्दों में रणजीत सिंह सामान्य व्यक्ति नही थे वरन सम्पूरण पूर्व और पश्चिमी संसार में दुर्लभ मानसिक शक्तियों के स्वामी थे |[15,17]

रोचक तथ्य

· महा सिंह और राज कौर के पुत्र रणजीत सिंह दस साल की उम्र से ही घुड़सवारी, तलवारबाज़ी, एवं अन्य युद्ध कौशल में पारंगत हो गये। नन्ही उम्र में ही रणजीत सिंह अपने पिता महा सिंह के साथ अलग-अलग सैनिक अभियानों में जाने लगे थे।

· महाराजा रणजीत सिंह को कोई औपचारिक शिक्षा नहीं मिली थी, वह अनपढ़ थे।

· अपने पराक्रम से विरोधियों को धूल चटा देने वाले रणजीत सिंह पर 13 साल की कोमल आयु में प्राण घातक हमला हुआ था। हमला करने वाले हशमत खां को किशोर रणजीत सिंह नें खुद ही मौत की नींद सुला दिया।

· बाल्यकाल में चेचक रोग की पीड़ा, एक आँख गवाना, कम उम्र में पिता की मृत्यु का दुख, अचानक आया कार्यभार का बोझ, खुद पर हत्या का प्रयास इन सब कठिन प्रसंगों नें रणजीत सिंह को किसी मज़बूत फौलाद में तबदील कर दिया।

· Maharaja Ranjit Singh का विवाह 16 वर्ष की आयु में महतबा कौर से हुआ था। उनकी सास का नाम सदा कौर था। सदा कौर की सलाह और प्रोत्साहन पा कर रणजीत सिंह नें रामगदिया पर आक्रमण किया था, परंतु उस युद्ध में वह सफलता प्राप्त नहीं कर सके थे।

· उनके राज में कभी किसी अपराधी को मृत्यु दंड नहीं दिया गया था। रणजीत सिंह बड़े ही उदारवादी राजा थे, किसी राज्य को जीत कर भी वह अपने शत्रु को बदले में कुछ ना कुछ जागीर दे दिया करते थे ताकि वह अपना जीवन निर्वाह कर सके।

· वो महाराजा रणजीत सिंह ही थे जिन्होंने हरमंदिर साहिब यानि गोल्डन टेम्पल का जीर्णोधार करवाया था।

· उन्होंने कई शादियाँ की, कुछ लोग मानते हैं कि उनकी 20 शादियाँ हुई थीं।

· महाराजा रणजीत सिंह न गौ मांस खाते थे ना ही अपने दरबारियों को इसकी आज्ञा देते थे।

महाराजा रणजीत सिंह का जन्म एक ऐसे समय में हुआ था जब पंजाब के अधिकांश हिस्सों में सिखों द्वारा एक कंफ़ेडरेट सरबत खालसा प्रणाली के तहत शासन किया गया था और इस क्षेत्र को गुटों के रूप में जाना जाता था. रणजीत जब 12 साल के थे तब उनके पिता की मृत्यु हो गई, जिसका पालन-पोषण उनकी मां राज कौर और बाद में उनकी सास सदा कौर ने किया था।

महाराजा रणजीत सिंह 18 वर्ष की आयु में सुकेरचकिया मिसल के अधिपति के रूप में पदभार संभाला. मिसल अरबी शब्द है जिसका भावार्थ "दल" होता हैं. प्रत्येक दल का एक सरदार होता था। रणजीत सिंह महत्वाकांक्षी शासक और एक साहसी योद्धा थे उन्होंने सभी अन्य गुमराहों पर विजय प्राप्त करना शुरू कर दिया और भंगी मसल से लाहौर के विनाश ने सत्ता में अपने उदय के पहले महत्वपूर्ण कदम को चिह्नित किया था।

अंततः रणजीत सिंह ने सतलज से झेलम तक मध्य पंजाब के क्षेत्र पर विजय प्राप्त की, अपने क्षेत्र का विस्तार किया और सिख साम्राज्य की स्थापना की. बहादुरी और साहस के कारण उन्होंने "शेर-ए-पंजाब" ("पंजाब का शेर") का खिताब अर्जित किया।[18]

रणजीत सिंह का जन्म सन 1780 में गुजरांवाला में हुआ था. उनके पिता का नाम महा सिंह और माता का नाम राज कौर था. चूंकि, उनके पिता सुकर चाकिया मिसल के मुखिया थे, जोकि उस समय का जाना माना संगठन था। इस कारण उनकी नन्हीं आंखों ने हमेशा वीरता की तस्वीरें देखी और उनके कानों ने साहस के किस्से सुने ,रणजीत सिंह को युद्ध का पहला स्वाद था, जब वह शायद दस साल के थे।

असल में उस दौर में साहिब सिंह भांगी नामक एक शासक हुआ करता था, जिसका वास्ता गुजरात से था. उसने रणजीत सिंह के पिता को कमजोर जानकर उन पर हमला कर दिया. बाद में जब उसे कड़ी टक्कर मिली, तो उसने खुद को एक सोधरन के किले में कैद कर लिया. साथ ही वहां से महा सिंह की सेना पर वार करना शुरु कर दिया. चूंकि, उसके इरादे नेक नहीं थे।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

इसलिए महा सिंह ने तय किया कि वह किसी भी कीमत पर उसे किले से निकाल कर रहेंगे और सबक सिखायेंगे, ताकि कोई और उसकी तरह दुस्साहस न कर सके. इसके लिए उन्होंने पूरे किले की घेराबंदी कर ली. महीनों तक वह अपने सैनिकों के साथ पड़े रहे, लेकिन साहिब सिंह भांगी को परास्त नहीं कर सके थे।

रंजीत सिंह 18 साल की उम्र में सुकेरचकिया मसलक के अधिपति बन गए. सत्ता संभालने के बाद उन्होंने अपने क्षेत्र का विस्तार करने के लिए अभियान शुरू किए. उन्होंने अन्य गुमराहों की भरपाई करते हुए अपने विजय अभियान की शुरुआत की और 1799 में भंगी मसल से लाहौर पर कब्जा कर लिया और बाद में इसे अपनी राजधानी बनाया. फिर उन्होंने पंजाब के बाकी हिस्सों पर कब्जा कर लिया।

1801 में उन्होंने सभी सिख गुटों को एक राज्य में एकजुट किया और 12 अप्रैल को बैसाखी के दिन "महाराजा" की उपाधि ग्रहण की. इस समय उनकी आयु मात्र 20 साल थी. फिर उन्होंने आगे अपने क्षेत्र का विस्तार किया. उन्होंने 1802 में भंगी मिस्ल शासक माई सुखन से अमृतसर के पवित्र शहर को जीत लिया. उन्होंने 1807 में अफगान प्रमुख कुतुब उद-दीन से कसूर पर कब्जा करके अपनी जीत जारी रखी।

Maharaja Ranjit Singh का साम्राज्य –

वह 1809 में हिमालय के कम हिमालय में कांगड़ा के राजा संसार चंद की मदद करने के लिए गए थे. सेनाओं को हराने के बाद उन्होंने कांगड़ा को अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया. 1813 में, महाराजा रणजीत सिंह कश्मीर में एक बार्कज़े अफगान अभियान में शामिल हो गए, लेकिन बार्केज़ द्वारा धोखा दिया गया था. फिर भी वह अपदस्थ अफगान राजा के भाई शाह शोज को बचाने के लिए गया।

पेशावर के दक्षिण-पूर्व में सिंधु नदी पर अटॉक के किले पर कब्जा कर लिया था तब उन्होंने शाह शोजा पर प्रसिद्ध कोह-ए-नूर हीरे के साथ भाग लेने का दबाव डाला जो उनके कब्जे में था.उन्होंने अफगानों से लड़ने और उन्हें पंजाब से बाहर निकालने में कई साल बिताए. आखिरकार उन्होंने पेशावर सहित पश्तून क्षेत्र पर कब्जा कर लिया और 1818 में मुल्तान प्रांत भी जीत लिया था। [11,12,13] उसने इन विजय के साथ मुल्तान क्षेत्र में सौ वर्षों से अधिक के मुस्लिम शासन को समाप्त कर दिया. उन्होंने 1819 में कश्मीर पर कब्जा कर लिया। रणजीत सिंह एक धर्मनिरपेक्ष शासक थे, जिनका सभी धर्मों में बहुत सम्मान था. उनकी सेनाओं में सिख, मुस्लिम और हिंदू शामिल थे और उनके कमांडर भी विभिन्न धार्मिक समुदायों से आते थे। 1820 में उन्होंने पैदल सेना और तोपखाने को प्रशिक्षित करने के लिए कई यूरोपीय अधिकारियों का उपयोग करके अपनी सेना का आधुनिकीकरण करना शुरू किया. उत्तर-पश्चिम सीमांत में हुई विजय में आधुनिक सेना ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया।

निष्कर्ष

1830 के दशक तक अंग्रेज भारत में अपने क्षेत्रों का विस्तार करने लगे थे. वे सिंध प्रांत को अपने लिए रखने पर आमादा थे और रणजीत सिंह को उनकी योजनाओं को स्वीकार करने की कोशिश करते थे. यह रणजीत सिंह के लिए स्वीकार्य नहीं था और उन्होंने डोगरा कमांडर जोरावर सिंह के नेतृत्व में एक अभियान को अधिकृत किया जिसने अंततः 1834 में रणजीत सिंह के उत्तरी क्षेत्रों को लद्दाख में विस्तारित किया।

1837 में सिखों और अफगानों के बीच आखिरी टकराव जमरूद की लड़ाई में हुआ था. सिख खैबर दर्रे को पार करने की ओर बढ़ रहे थे और अफगान सेनाओं ने जमरूद पर उनका सामना किया. अफ़गानों ने पेशावर पर आक्रमण करने वाले सिखों को वापस लेने का प्रयास किया, लेकिन असफल रहे। 1839 में रणजीत सिंह की मृत्यु हो गई और 1846 में सिख सेना को प्रथम एंग्लो-सिख युद्ध में हराया गया. 1849 में द्वितीय एंग्लो-सिख युद्ध के अंत तक पंजाब में अंग्रेजों ने सिख साम्राज्य का अंत कर दिया।

अपनी लाहौर विजय के बाद रणजीत सिंह ने अपने सिख साम्राज्य को विस्तार देना शुरू किया। इसके लिए उन्होंने पंजाब के बाकी हिस्से के अलावा पंजाब से परे इलाके जैसे कश्मीर, हिमालय के इलाके और पोठोहार क्षेत्र पर अपना ध्यान केंद्रित किया। 1802 में उन्होंने अमृतसर को अपने साम्राज्य में मिला लिया। 1807 में उन्होंने अफगानी शासक कुतबुद्दीन को हराया और कसूर पर कब्जा कर लिया।

1818 में मुल्तान और 1819 में कश्मीर सिख साम्राज्य का हिस्सा बन चुका था। अफगानों और सिखों के बीच 1813 और 1837 के बीच कई युद्ध हुए। 1837 में जमरुद का युद्ध उनके बीच आखिरी भिड़ंत थी। इस भिड़ंत में रणजीत सिंह के एक बेहतरीन सिपाहसालार हरि सिंह नलवा मारे गए थे। इस युद्ध में कुछ सामरिक कारणों से अफगानों को बढ़त हासिल हुई और उन्होंने काबुल पर वापस कब्जा कर लिया।

महाराजा रणजीत सिंह की उपलब्धियां –

रणजीत सिंह ने कई विवाह किये थे. उनमें सिख, हिंदू और साथ ही मुस्लिम धर्म की पत्नियां थीं. उनकी कुछ पत्नियां के नाम मेहताब कौर, रानी राज कौर, रानी रतन कौर, रानी चंद कौर और रानी राज बंसो देवी थीं.उनके कई बच्चे भी थे जिनमें बेटे खड़क सिंह, ईशर सिंह, शेर सिंह, पशौरा सिंह और दलीप सिंह शामिल हैं. हालाँकि उन्होंने केवल खारक सिंह और दलीप सिंह को अपने जैविक पुत्र के रूप में स्वीकार किया था। [10,11]

उन्हें एक शानदार व्यक्तित्व वाले एक सक्षम और न्यायप्रिय शासक के रूप में याद किया जाता है। उनका साम्राज्य धर्मनिरपेक्ष था जहां सभी धर्मों का सम्मान किया जाता था और उनकी धार्मिक मान्यताओं के कारण किसी के साथ भेदभाव नहीं किया था। उन्होंने

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

हरमंदिर साहिब के सुनहरे सौंदर्यीकरण में भी प्रमुख भूमिका निभाई। उनके साहस और वीरता के लिए उन्हें दुनिया भर में बहुत सम्मान दिया गया इसीकारण उन्हें "शेर-ए-पंजाब" ("पंजाब का शेर") के रूप में जाना जाता था।

रणजीत सिंह अफगानों के लिए काल बने –

महाराज बनते ही उन्होंने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया और अपने साम्राज्य का विस्तार शुरु कर दिया , उनके दौर में भारत में अफगानों ने अपना आतंक मचा रखा था। वह तेजी से लूट-पाट करने में लगे थे , रणजीत सिंह ने उनका इलाज करते हुए उनके खिलाफ मोर्चा खोल दिया। उन्होंने उनके खिलाफ कई लड़ाइयां लड़ीं. इसके परिणाम स्वरुप वह उन्हें पश्चिमी पंजाब की ओर खदेड़ने में सफल रहे।

आगे बढ़ते हुए उन्होंने पेशावर समेत पश्तून क्षेत्र पर अपना कब्जा जमाया, जोकि उनकी बड़ी सफलता साबित हुआ. यह एक ऐसा क्षेत्र था, जहां पर उनसे पहले किसी गैर मुस्लिम ने राज नहीं किया था। वह यही नहीं रुके आगे बढ़ते हुए उन्होंने पेशावर, जम्मू कश्मीर और आनंदपुर तक अपनी विजय पताका लहराई.खुद को और ज्यादा मजबूत करते हुए उन्होंने एक विशेष सेना के गठन में अपनी अहम भूमिका अदा की, जिसे 'सिख खालसा' के नाम से जाना गया।

कहा जाता है कि अपने शासन काल में उन्होंने पंजाब को एक समृद्ध और मजबूत राज्य बना दिया था , इतना मजबूत कि उनके जीते-जी अंग्रेज तक वहां कदम रखने से डरते रहे, आखिरकार उन्होंने मध्य पंजाब के क्षेत्र सतलुज से झेलम तक पर कब्जा कर, अपने क्षेत्र का विस्तार किया और सिख साम्राज्य की स्थापना की. उनकी बहादुरी और साहस के कारण उन्होंने "शेर-ए-पंजाब" कहा गया।

रणजीत सिंह सदा कौर की कुशलता से लाहौर के राजा बने –

मुश्किल घड़ी में Raja Ranjit Singh ने सदा कौर की सलाह ली थी।
मगर यह सदा कौर के लिए भी आसान नहीं था।
लेकिन बिना डरे सदा कौर ने रणजीत सिंह को कहा लाहौर पर हमला होगा।
कौर ने रणजीत से पूछा कि आपके पास कितनी सेना है।
इस पर रणजीत सिंह ने बताया कि 3000 सैनिक तैयार है।
सदा कौर के पास इस दौरान 2000 सैनिकों की फौज थी।
सदा कौर ने कहा कि 5000 की कुल फौज के साथ हम लाहौर पर हमला करेंगे।
रणजीत सिंह डरे हुए थे और उन्हें पता था कि यदि युद्ध हुआ तो हार निश्चित है।
उन्होंने सदा कौर को कहा, माताजी हमारी सेना जैसे ही कूच करेगी हम पर आक्रमण हो जाएगा।
इसके बाद सदा कौर ने कहा कि नहीं हम अमृतसर जाएंगे।
सैनिकों को कहें कि वहां हम पवित्र सरोवर में स्नान करेंगे।[15]
इसके बाद सेना सहित रणजीत और सदा कौर अमृतसर पहुंचे और डेरा डाला था।
यह बात आग की तरह फैल गई. इसके बाद वहीं पर देर रात तक सदा कौर ने
रणजीत सिंह और सेना कमांडरों के साथ बैठक की और इसके तुरंत बाद सेना ने लाहौर की तरफ कूच किया।
लाहौर के दरवाजे पर पहुंची सेना को देख वहां मौजूद दोनों कबीलों के लड़ाकों ने
भागने में भलाई समझी. इसके बाद मुश्किल थी छेत सिंह के किले पर कब्जा करना।

लाहौर के गेट रणजीत सिंह के लिए खोला –

लाहौर के गेट जनता ने रणजीत सिंह के लिए खोल दिए थे। सेना ने खुशी के चलते गोलियां चलाना शुरू कर दिया. इसके बाद सदा कौर ने किले के दरवाजे पर जाकर दरबान से कहा कि उन्हें छेत सिंह से अकेले में मिलना है. छेत सिंह ने उन्हें किले के अंदर आने को कहा. बेखौफ सदा कौर बिना सिपाहियों या हथियार के अकेली छेत सिंह से मिलने पहुंच गईं। वहां उन्होंने छेत सिंह से कहा कि दोनों कबीलों को हमारी सेना ने मार दिया है. मैं आपकी भलाई चाहती हूं, इसलिए आप किला छोड़ दें, आपकी जागीरें आपकी ही रहेंगी बस लाहौर रणजीत सिंह का होगा. ऐसा नहीं करने पर उन्हें मार दिया जाएगा. इसके दो घंटे बाद छेत सिंह ने किले की चाबियां रणजीत सिंह के हवाले कर दीं. इस तरह बिना एक बूंद खून बहाए सदा कौर ने रणजीत सिंह को लाहौर की गद्दी संभलवा दी।

Maharaja Ranjit Singh आधुनिक सेना के हिमायती –

Raja Ranjit Singh आधुनिक सेना बनाना चाहते थे।
इसके लिए उनको पश्चिमी युद्ध कौशल और तरीकों को अपनाने से भी परहेज नहीं था।
उन्होंने अपनी सेना में कई यूरोपीय अधिकारियों को भी नियुक्त किया।
उनकी सेना को खालसा आर्मी के नाम से जाना जाता था।
सेना में जहां हरि सिंह नलवा, प्राण सुख यादव, गुरमुख सिंह लांबा,

दीवान मोखम चंद और वीर सिंह ढिल्लो जैसे भारतीय जनरल थे।
फ्रांस के जीन फ्रैंकोइस अलार्ड और क्लाउड ऑगस्ट कोर्ट, इटली के जीन बापतिस्ते वेंचुरा और
पाओलो डी एविटेबाइल, अमेरिका के जोसिया हरलान और स्कॉट-आयरिश मूल के
अलेक्जेंडर गार्डनर जैसे सैन्य ऑफिसर भी शामिल थे।
गार्डनर रणजीत सिंह के निधन के बाद भी सिख सेना में रहे।[17,18]
सिख और अंग्रेजों के बीच पहले युद्ध के बाद गार्डनर कश्मीर के महाराजा की फौज में चले गए।
और कथित रूप से अपने अंतिम दिन श्रीनगर में गुजारे।
फ्रेंच सिपाही जीन फ्रैंकॉइस अलार्ड भाड़े के सिपाही और अडवेंचर पसंद थे।
उन्होंने नेपोलियन की सेना में अपनी सेवा दी थी। 1822 में वह रणजीत सिंह की सेना में शामिल हुए थे।
रणजीत सिंह की फौज में वह ड्रैगून और लांसर्स नाम की कोर के प्रभारी थे।
जिनको बाद में महाराज की सेना की यूरोपीय ऑफिसर कोर का लीडर बना दिया गया।
Maharaja Ranjit Singh Death – रणजीत सिंह का अवसान –
Raja Ranjit Singh की 27 जून 1839 को लाहौर में उनकी मृत्यु हो गई।
वहीँ उनका अंतिम संस्कार किया गया और उनके अवशेष
पंजाब के लाहौर में Raja Ranjit Singh की समाधि में रखे गए।
उनके उत्तराधिकारी के रूप में पुत्र खड़क सिंह स्वीकार किया गया।
लेकिन उनकी मृत्यु के 10 वर्ष के भीतर सिख साम्राज्य का अंत हो गया।
उन्हें एक शानदार व्यक्तित्व वाले एक सक्षम और न्यायप्रिय शासक के रूप में याद किया जाता है.
उनका साम्राज्य धर्मनिरपेक्ष था जहां सभी धर्मों का सम्मान किया जाता था।
उनकी धार्मिक मान्यताओं के कारण किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जाता था।
उन्होंने हरमंदिर साहिब के सुनहरे सौंदर्यीकरण में भी प्रमुख भूमिका निभाई।
उनके साहस और वीरता के लिए उन्हें दुनिया भर में बहुत सम्मान दिया गया था।
इसीकारण उन्हें "शेर-ए-पंजाब" ("पंजाब का शेर") के रूप में जाना जाता था।
सिख साम्राज्य का पतन –
दशकों के शासन के बाद रणजीत सिंह का 27 जून, 1839 को निधन हो गया।
उनके बाद सिख साम्राज्य की बागडोर खड़क सिंह के हाथ में आई।
Raja Ranjit Singh के मजबूत सिख साम्राज्य को संभालने में खड़क सिंह नाकाम रहे।
शासन की कमियों और आपसी लड़ाई की वजह से सिख साम्राज्य का पतन शुरू हो गया।
सिख और अंग्रेजों के बीच हुए 1845 के युद्ध के बाद महान सिख साम्राज्य पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया।
महा सिंह और राज कौर के पुत्र रणजीत सिंह दस साल की उम्र से ही
घुड़सवारी, तलवारबाज़ी, एवं अन्य युद्ध कौशल में पारंगत हो गये।
नन्ही उम्र में ही रणजीत सिंह अपने पिता महा सिंह के साथ
अलग-अलग सैनिक अभियानों में जाने लगे थे।
महाराजा रणजीत सिंह को कोई औपचारिक शिक्षा नहीं मिली थी, वह अनपढ़ थे।
अपने पराक्रम से विरोधियों को धूल चटा देने वाले रणजीत सिंह पर 13 साल की
कोमल आयु में प्राण घातक हमला हुआ था।
हमला करने वाले हशमत खां को किशोर रणजीत सिंह नें खुद ही मौत की नींद सुला दिया।
राजा रणजीत सिंह का विवाह 16 वर्ष की आयु में महतबा कौर से हुआ था।
उनकी सास का नाम सदा कौर था।
उनके राज में कभी किसी अपराधी को मृत्यु दंड नहीं दिया गया था।
रणजीत सिंह बड़े ही उदारवादी राजा थे, किसी राज्य को जीत कर भी वह अपने शत्रु को
बदले में कुछ ना कुछ जागीर दे दिया करते थे।
वो महाराजा रणजीत सिंह ही थे जिन्होंने हरमंदिर साहिब यानि गोल्डन टेम्पल का जीर्णोधार करवाया था।
उन्होंने कई शादियाँ की, कुछ लोग मानते हैं कि उनकी 20 शादियाँ हुई थीं।
महाराजा रणजीत सिंह न गौ मांस खाते थे ना ही अपने दरबारियों को इसकी आज्ञा देते थे। [19]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. S.R. Bakshi, Rashmi Pathak (2007). "1-Political Condition". प्रकाशित S.R. Bakshi, Rashmi Pathak (संपा°). Studies in Contemporary Indian History – Punjab Through the Ages Volume 2. Sarup & Sons, New Delhi. पृ° 2. आईऍसबीऍन° 81-7625-738-9. मूल से 12 मई 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2010. |accessdate= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
2. ↑ History of the Jatt Clans - H.S Duleh (Translation from original Punjabi work "Jattan da Itihas" by Gurjant Singh).
3. ↑ 1911 census of British Punjab - Major General Barstow
4. ↑ Kushwant Singh. "RANJIT SINGH (1780–1839) Archived 2015-11-08 at archive.today". Encyclopaedia of Sikhism. Punjabi University Patiala. Retrieved 18 August 2015.
5. ↑ Jean Marie Lafont (2002). Maharaja Ranjit Singh: Lord of the Five Rivers. Oxford University Press. pp. 33–34, 15–16. ISBN 978-0-19-566111-8
6. ↑ "Peace and Progress". pib.nic.in. मूल से 2 जुलाई 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 जुलाई 2017.
7. ↑ Noblemen and Kinsmen History of a Sikh Family: History of a Sikh Family, Author = Preminder Singh Sandhawalia, Year = 1999, Publisher = Munshiram Manoharlal, ISBN 8121509149
8. ↑ History of the Jatt Clans - H.S Duleh (Translation from original Punjabi work "Jattan da Itihas" by Gurjant Singh).
9. ↑ History of the Jatt Clans - H.S Duleh (Translation from original Punjabi work "Jattan da Itihas" by Gurjant Singh).
10. ↑ 1911 census of British Punjab - Major General Barstow
11. धर्मनिरपेक्ष धर्म (महाराजा रणजीत सिंह की धर्मनिरपेक्षता का विस्तृत वर्णन)
12. Maharaja Ranjit Singh family history
13. Ranjit Singh profile from sikh-history.com
14. Ranjit Singh military career profile
15. Extra profile from sikh-history.com
16. Foreign officers in Ranjit Singh's Court
17. Detailed article on Ranjit Singh's Army
18. Article on Maharaja Ranjit Singh Museum
19. Gurudwara Sri Sher Gah Sahib(Paonta Sahib)

Impact Factor: 7.580

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com

www.ijmrsetm.com